माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्यों पर श्रीमद्भगवद् गीता के प्रभाव का अध्ययन

A Study of Shree Madbhagvad Geeta's Effect on the Spiritual Values of Students at Secondary Level.

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय

गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर

को

पी-एच.डी.(शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रारूप

शोधकर्त्री :

हेमलता दर्जी

iase
Deemed
university

शोध निर्देशिका :

डॉ. कंचन शर्मा

विभागाध्यक्ष (शिक्षा)

बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई)

गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

जिला-चूरू (राजस्थान) - 331401

2016

शोध – प्रारूप

1. शोधकर्त्री का नाम : हेमलता दर्जी

2. संस्थान का पता : आईएएसई मान्य विश्वविद्यालय, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

3. शोध विषय : *माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्यों पर श्रीमद्भगवद् गीता के प्रभाव का अध्ययन*

1. –प्रस्तावना :–

आधुनिक काल में परिर्वतन की गति बहुत तीव्र है। प्रगति का अर्थ है परिवर्तन, परिवर्तन यदि सकारात्मक हो तभी सराहनीय है। परिवर्तन हेतु सार्थक और तर्कसगत प्रतिलबन गीता की शिक्षा द्वारा दिया जा सकता है। बदलते युग में परम्पराजनित आवश्यकताओं के आधार पर स्थापित शिक्षा का शिक्षण पर्याप्त नहीं होगा। हमें जीवन विरोधी तत्त्वों को पनपने देने के लिए एवं नवीन मूल्य आधारित शिक्षा देकर समाज को प्रगति की ओर अग्रसर करने के लिए समय–समय पर गीता के निर्देशनीय उपागमों से शिक्षा प्राप्त कर आदर्श स्थापित करना चाहिए। गीता हमारे अहंकार को नष्ट करके ऐसी आत्मसक्ति भरती है कि व्यक्ति शिक्षा का वास्तविक स्वरूप पहचानकर आस्था के पथ पर अग्रसर होता चला जाता है।[1] वर्तमान समय में मानव के

[1] मालवीय, पंडित रामेश्वरप्रसाद – गीता अवगाहन (1990), प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ. सं. – 80–84.

विकास में जो सबसे बड़ी बाधा है, वह है उसका अन्तर्द्वन्द्व, जिसने मनुष्य के हृदय को कुरुक्षेत्र में परिवर्तित कर दिया है। गीता इस द्वन्द्व को दूर कर मानसिक शांति प्रदान करने का प्रयास करती है।

गीता के अनुसार ध्यान कहीं बाहर से नहीं आता वह व्यक्ति के भीतर ही छिपा रहता है। यदि मनुष्य के हृदय के आवरण को हटा दिया जाए तो मनुष्य को सब प्रकार का भौतिक तथा अधिभौतिक ज्ञान प्राप्त हो सकता है। ज्ञान की आत्मानुभूति के लिए ध्यान को केन्द्रित करना अति आवश्यक है। मन के केन्द्रीकरण द्वारा ही वास्तव में शिक्षा की प्राप्ति होती है। गीता की शिक्षा मनुष्य के चिंतन व मनन पर बल देकर उसे प्रेरणा प्रदान करती है। आज हम गीता की शिक्षा को आदर्श रूप में शिक्षा का परिमार्जन कर उसे राष्ट्र के लिए उपयोगी है।[2]

छात्र व शिक्षक को कर्त्तव्य का मार्ग दिखाने के लिए आवश्यक है कि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्राचीन संस्कृति के महत्त्व का उद्घोष करने वाले गीता दर्शन जैसे ग्रंथ सम्मिलित किये जाये। गीता के उपदेश को आत्मसात करने के लिए श्रीकृष्ण ने ज्ञान दिया न कि उसे केवल धार्मिक पुस्तक की तरह पढ़कर रटने के लिए। गीता के माध्यम से श्रीकृष्ण ने जो संदेश दिया उसके केन्द्रीय भाव को समझकर वास्तविक अर्थ को प्रकाश में लाने के लिए गीता की शिक्षा अपरिहार्य है।

2. अध्ययन का महत्व :–

महाभारत में जिस समय गीता का अवतरण हुआ उस समय हमारे समाज में चारों तरफ अराजकता का वातावरण व्याप्त था। प्रेम, सद्भाव, भाई–चारा, करूणा, दया आदि का स्थान, द्वेष, घृणा, कपट, छल ने ले लिया था। उस समय समाज को नई दिशा दिखाकर कर्त्तव्य की राह पर लाने के लिये श्रीकृष्ण जी का अवतार सामने आया जिसने अर्जुन को भक्ति, ज्ञान व कर्म के संगम का मार्ग दिखाकर उसे आत्मा–साक्षात्कार कराया। आज भी हमारे समाज में महाभारत जैसी

[2] महाराज, सुधांशुजी – पंजाब केशरी (दैनिक–पत्र), संस्करण 18 अगस्त 2008, पृ. सं. –4

स्थिति चारों तरफ दिखाई देती है, अतः आज विजय प्राप्त करने हेतु गीता जैसे अस्त्र की आवश्यकता प्रतीत होती है।

गीता जैसे ग्रन्थ को पढ़कर इसका अनुसरण तो तो आरम्भ से किया जाता रहा है, पर इसमें दिए गए ज्ञान व शिक्षा के आदर्शों का अनुसरण करने का प्रयास नहीं किया गया है। गीता की शिक्षाएँ हमारा मार्गदर्शन कर हमारे मनोभावों को संतुलित करती है। गीता–दर्शन के ज्ञान को प्रकाश में लाने की आवश्यकता इसीलिए भी अनुभव की गई है कि मनुष्य का जीवन उद्देश्यपूर्ण और उपयोगी तभी बन सकता है जब हम गीता के उपदेशों के व्यावहारिक पक्ष को समझें। गीता जीवन का एक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है जिससे हमें यथार्थ का सिद्धान्त प्राप्त होता है। गीता के अध्ययन की आवश्यकता पर ध्यान इसीलिए भी आकृष्ट हो जाता है क्योंकि इस क्षेत्र में हुए शोधकार्य की संख्या अति न्यून है। श्री कृष्ण द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों एवं आदर्शो की व्याख्या कर समाज के सामने प्रस्तुत करने की महती आवश्यकता है । शिक्षक एवं छात्र जो शिक्षा की धुरी और राष्ट्र निर्माता है, वे अपना कर्त्तव्य पालन सही दिशा में करें तो हम शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति करने में सफल हो सकते हैं, इनमें कर्तव्य बोध की यह भावना गीता के माध्यम से जाग्रत की जा सकती है।[3] शिक्षा के स्वरूप पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि शिक्षक व छात्र दिग्भ्रंमित होकर शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों की प्राप्ति करने में असफल है, ऐसी स्थिति में श्रीकृष्ण व अर्जुन के आदर्शो को प्रस्तुत कर मार्ग दिखाने का प्रयास किया जायेगा।

आज के भौतिकवादी युग में चारों तरफ वैचारिक मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो गई है। वैचारिक मतभेद को दूर करने में गीता में निहित सिद्धान्तों की पालना सहायक सिद्ध हो सकती है। वर्तमान मानव की आकांक्षा देखने पर यह ज्ञात होता है कि सुख की कामना में व्यक्ति संघर्ष, आशान्ति व द्वन्द्व में उलझकर रह गया है, इन मानसिक अवसादों को दूर करने में यह शोध मार्ग दिखाकर गीता की शिक्षाओं का वास्तविक रूप समाज के समक्ष प्रस्तुत करेगा। वैज्ञानिक चेतना के

[3] दैनिक पत्र–अरूणप्रभा, संस्करण 29 सितम्बर 2008, प्रकाशन, गंगा, अलवर, पृ.सं.2

परिणाम स्वरूप सामान्य मानव अपना मानसिक संतुलन खो बैठा है, प्रस्तुत शोध के माध्यम से वर्तमान परिदृश्य में अध्यापक शिक्षा में गीता के वास्तविक स्वरूप से परिचित कराकर मानव के सुख शान्ति हेतु कोई सुगम मार्ग ढूँढ़ने का प्रयास किया जाएगा। विश्वास को अहिंसा, सदाचार, सामाजिकता की रक्षा के लिए इस बात की आवश्यकता है कि प्राचीन ग्रंथ में प्रतिपादित ज्ञान को विश्व व समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जायेग। अतः शोधकर्त्री ने इस कमी का अनुभव करके प्रस्तुत विषय को अपने अनुसंधान का आधार बनाया। शोध का विषय चुनने का आधार यह भी रहा कि आज मानव मानवता एवं मानवीय मूल्यों का संरक्षण करने में असमर्थ है, जिससे इसका ह्रास होने लगा है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से व्यक्ति को मानवता व मूल्यों के संरक्षण की ओर प्रेरित किया जाएगा।[4]

यदि हम गीता के बताये हुए मार्ग पर चले तो हम एक ऐसी नई सामाजिक व्यवस्था का निर्माण कर सकते है जिसमें मानव की उच्चतम आकांक्षाऐं और नवीन अशाएं साकार हो सकती है। गीता का अध्ययन कर मानव के सामने यह आदर्श प्रस्तुत किया जा सकता है कि वास्तविक जीवन का उद्देश्य कर्म करने में है, जीवन संघर्ष से बचने में नहीं है। गीता द्वारा यह ज्ञान प्राप्त होता है कि केवल शिक्षा प्राप्त करने से ही किसी उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो सकती अपितु उस शिक्षा का सही समय व सही स्थान पर प्रयोग करने की कला भी आनी चाहिए । गीता मानव प्रयत्न पर बहुत बल देती है। उसकी धारणा है कि हमें अपने हृदय से भीरुता और दुर्बलता को दूर करके तथ्यों का सामना करना चाहिए, उस से दूर नहीं भागना चाहिए, दुष्टता का जवाब दुष्ट नीति से ही देना चाहिए जिससे दुष्टता का दमन हो सके।[5] आज गीता जैसे दिव्य ग्रन्थ की शिक्षाओं को प्रकाश में लाने की आवश्यकता है जो समाज को हिलाकर उसकी निष्क्रियता की तंद्रा दूर कर उसे ऊर्जस्विता द्वारा नया जीवन दे सके।

आज के मानसिक रूप से दुर्बल व विवाद में घिरे छात्र को जिस चीज की सबसे अधिक आवश्यकता है, वह है आत्मविश्वास और यह

---

[4] प्राईमरी शिक्षक– सिंह, सत्यदेव, प्रकाशन– एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली, जनवरी 2003, पृसं. 70–73

[5] मालवीय, पं. रामेश्वर प्रसाद–गीता अवगाहन, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

हमें गीता की शिक्षा द्वारा प्राप्त होता है। गीता में हम देखते हैं कि दुर्योधन में आत्मविश्वास की कमी थी इस कारण उसे अपने ऊपर भी संशय होने लगा और उसे एक विशाल सेना खड़ी कर दी, फिर भी विजय श्री उससे दूर भागती रही जबकि अर्जुन के अन्दर श्रीकृष्ण ने इनता आत्मविश्वास उत्पन्न कर दिया कि उसने सभी योद्धाओं को अपने पौरूष बल के सामने भयभीत कर दिया। गीता जैसे अद्धितीय ग्रंथ में इतनी विशेषताऐं है कि उसे समाज के सामने प्रस्तुत कर लोगों की मानसिकता को बदला जा सकता है, मानसिकता बदलने से ही समाज व शिक्षा का रूप बदलता है। अनुसंधान के क्षेत्र में जब हम प्रवेश करते है तो देखतें हैं, कि इसमें दार्शनिक अनुसंधानों का नितान्त अभाव रहा है, अतः इस अभाव की पूर्ति कर दर्शन शास्त्र के अन्तर्गत गीता की शिक्षाओं को शिक्षार्थी के समक्ष प्रस्तुत करने की आवश्यकता शोधकर्त्री द्वारा अनुभव की गई। वैसे भी मानव के आध्यात्मिक स्वरूप का विकास कर श्रेष्ठ मानव बनाने हेतु गीता दर्शन का अध्ययन कर अज्ञान के अंधकार को दूर करने की आवश्यकता आज दृष्टिगोचर हो रही है।

3. अध्ययन का औचित्य :-

जब कोई अनुसंधान कार्य किया जाता है तो उस अध्ययन की उपयोगिता, महत्व, प्रकृति आदि का औचित्य स्पष्ट करना इसलिए आवश्यक होता है कि हम इसके द्वारा यह सिद्ध कर सकें कि अनुसंधान के परिणाम व निष्कर्ष मानवीय जीवन व शैक्षिक जगत को किस प्रकार प्रभावित करेंगे। **महात्मा गाँधी** के शब्दों में, मुझे भगवद्गीता में एक ऐसी सान्त्वना मिलती है, जो मुझे ''सर्मन ओन दि माउंट (बाइबिल का एक प्रसंग) तक में नहीं मिलती। जब निराशा मेरे सामने आ खड़ी होती है और जब मैं बिलकुल एकांकी अनुभव करना हूॅ और मुझे प्रकाश की कोई किरण नहीं दिखाई पड़ती, तब मैं गीता की शरण लेता हूॅं। जहाँ–तहाँ कोई न कोई श्लोक मुझे ऐसा दिखाई पड़ जाता है कि मैं विषम विपत्तियों में भी तुरन्त मुस्कुराने लगता हूॅ।[6] ''

[6]महादेव देसाई – दि गीता एकोर्डिंग टू गांधी (1946)

वर्तमान परिदृश्य में अध्यापक शिक्षा में गीता दर्शन की उपादेयता से संबंधित जो भी साहित्य उपलब्ध हुआ, उसके अध्ययन के उपरान्त शोधकर्त्री इस निष्कर्ष पर पहुँची कि ‘‘माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर श्रीमद्‌भगवद्‌ गीता का प्रभाव’’ इस क्षेत्र मे एक महत्वपूर्ण विषय है, पूर्व मे गीता व उसके कई विषयों पर शोध हो चुके है कि लेकिन इस विषय पर कोई शोधकार्य नही हुआ है, इसलिए शोधकर्त्री ने इस शीर्षक पर शोध करने का निश्चय किया ।

आधुनिक युग विज्ञान एवं तकनीकी का युग है अतः कुछ लोगो को यह शंका हो सकती है कि क्या आधुनिक युग में भी गीता से प्रेरणा मिलती रहेगी। अनेक आधुनिक दार्शनिकों, शिक्षा–शास्त्रियों, वैज्ञानिकों एवं राजनीतिज्ञों ने गीता से प्रेरणा पाई है। **महात्मा गांधी** कहा करते थे जिस प्रकार मेरी पत्नी मेरे लिए इस संसार मे सबसे सुन्दर स्त्री है उसी प्रकार भगवद्‌गीता भी सभी उपदेशों मे सर्वोच्च संगीत देती है। इसी प्रकार **पाश्चात्य विद्वान विलियम** ने गीता को किसी ज्ञान भाषा में उपस्थित सम्भवतः सबसे अधिक सुन्दर और एकमात्र दार्शनिक गीत कहा है। लोकमान्य तिलक, एनीबेसेन्ट व श्री अरविन्द ने भी आधुनिक युग की दृष्टि से गीता का औचित्य बताया है।

4. अध्ययन के उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य अनासक्ति पर श्री मद्‌भगवद्‌गीता के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य आत्मानुभूति पर श्री मद्‌भगवद्‌गीता के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य आस्था पर श्री मद्‌भगवद्‌गीता के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य ध्यान पर श्री मद्‌भगवद्‌गीता के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य समाधि पर श्री मद्‌भगवद्‌गीता के प्रभाव का अध्ययन करना।

5. अध्ययन की परिकल्पना :-

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य अनासक्ति पर श्री मद्भगवद्गीता का सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य आत्मानुभूति पर श्री मद्भगवद्गीता का सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य आस्था पर श्री मद्भगवद्गीता का सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य ध्यान पर श्री मद्भगवद्गीता का सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य समाधि पर श्री मद्भगवद्गीता का सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

5. सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :-

1. **दीक्षित रिंकू (2011)** ने **''गीता में वर्णित शिक्षक एवं शिक्षण प्रक्रिया का वर्तमान औचित्य''** करते हुए बताया कि गीता में निहित निर्देशनीय उपागमों का अध्ययन कर आज के मानव की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। हमें जीवन विरोधी तत्त्वों को पनपने देने के लिए एवं नवीन मूल्य आधारित शिक्षा देकर समाज को प्रगति की और अग्रसर करने के लिए समय–समय पर गीता के निर्देशनीय उपागमों से शिक्षा प्राप्त कर आदर्श स्थापित करना चाहिए।
2. **ओझा, विनोद (2011)** ने **''श्रीमद्भागवत गीता में मानवीय जीवन की दृष्टि से निर्देशनीय उपागमों का अध्ययन''** करते हुए बताया कि गीता में निहित निर्देशनीय उपागमों का अध्ययन कर आज के मानव की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। हमें जीवन विरोधी तत्त्वों को पनपने देने के लिए एवं नवीन

मूल्य आधारित शिक्षा देकर समाज को प्रगति की और अग्रसर करने के लिए समय–समय पर गीता के निर्देशनीय उपागमों से शिक्षा प्राप्त कर आदर्श स्थापित करना चाहिए।

3. **सिंह, सत्यदेव (2003)** ने अपने आलेख ***''गीता और उसका शिक्षा दर्शन''*** में निष्कर्ष स्थापित किया है कि गीता का अध्यात्मिक पक्ष जितना प्रबल है उसका व्यावहारिक पक्ष उनता ही सशक्त दृष्टिगोचर होता है।

6. अध्ययन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या :–

श्रीमद्‌भगवद्‌ गीता –

गीता का अर्थ है – ''गाया जाने वाला''। गीता के माध्यम से श्रीकृष्ण जी ने गाकर विश्व को ज्ञान देने का प्रयास किया है। महाभारत में कुल अठारह पर्व है, उनमें से भीष्म पर्व के अन्तर्गत यह श्रीमद्‌भगवद्‌गीता पर्व है। जो भीष्म पर्व के तेरहवें अध्याय से आरम्भ होकर बयालीसवें अध्याय से समाप्त होता है। इसमें कुल अठारह अध्याय तथा लगभग सात सौ श्लोक है। गीता में श्री कृष्ण जी ने महाभारत की रणभूमि में अर्जुन को ज्ञान व कर्म का संदेश दिया था।[7]

श्रीमद्‌भगवतगीता में शिक्षक कृष्ण की सबसे बड़ी विशेषता जो दृष्टिगोचर होती हैं, वह यह हैं कि श्रीकृष्ण का अस्तित्व एक ऐसे गुरू के रूप में हमारे सामने आता हैं जो शिष्य का विकास करने के लिए इस प्रकार वचनबद्ध हैं कि स्वयं ही गुरू शिष्य अर्जुन को उपदेश देकर अज्ञान को दूर करने का प्रयास करते हैं।

यदा–यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।[8]

श्रीकृष्ण अर्जुन के मन में यह भाव भर देना चाहते हैं कि जब भी समाज में अनैतिकता व अत्याचार बढ़ता हैं तो उसे दूर करने के

[7] रामसुखदास, स्वामी – श्रीमद्‌भगवद्‌गीता (सम्वत्‌ 2064), गीता प्रेस, गोरखपुर
[8] रामसुखदास, स्वामी – श्रीमद्‌भगवद्‌गीता (सम्वत्‌ 2064), गीता प्रेस, गोरखपुर, अध्याय –4, श्लोक – 7, पृ. सं.266.

लिए हर संभव प्रयास किये जाने चाहिए जिससे मानव को मुक्ति मिल सके और एक नये समाज का निर्माण हो सके।

7. अध्ययन का परिसीमन :-

प्रस्तुत अध्ययन में राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 100 विद्यार्थियों (50 छात्र+50 छात्राएँ) को लिया जायेगा।

8. शोधविधि :-

प्रस्तुत शोध में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा।

9. प्रयुक्त उपकरण :-

शोध में स्वनिर्मित प्रश्नावली, अवलोकन व साक्षात्कार मापनी आदि का प्रयोग किया जायेगा।

9. प्रयुक्त सांख्यिकी :-

शोधकर्त्री प्रस्तुत अध्ययन निम्न सांख्यिकी का प्रयोग करेगी –

1. मध्यमान।
2. प्रमाप विचलन।
3. बारम्बारता अनुपात।

10- प्रस्तावित शोध प्रबन्ध का अध्याय क्रम :-

प्रथम अध्याय :- अध्ययन की पृष्ठभूमि।

द्वितीय अध्याय :- संबंधित साहित्य का अध्ययन।

तृतीय अध्याय :- शोध विधि एवं प्रक्रिया।

चतुर्थ अध्याय :- सारणीयन एवं दत्त विश्लेषण।

पंचम अध्याय :- निष्कर्ष एवं सुझाव तथा कार्ययोजना।

12. शोधकार्य में लगने वाला समय :–

प्रस्तुत शोधकार्य पूर्ण करने में अनुमानित दो वर्ष का समय लगेगा, जिसका विवरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा रहा है :–

क्र.सं.	शोधकर्ता द्वारा किये जाने वाले शोधकार्य	अनुमानित समय
1	प्रथम अध्याय	4 माह
2	द्वितीय अध्याय	4 माह
3	तृतीय अध्याय	4 माह
4	चतुर्थ अध्याय	4 माह
5	पंचम अध्याय	4 माह
6	टंकण एवं बाईडिंग	4 माह
	कुल अवधि	**24 माह**

BIBLIOGRAPHY

1. गुप्ता, डॉ. महावीरप्रसाद (2005), ''शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श'', एच.पी. बुकहाउस, आगरा, पृष्ठ संख्या 52.
2. शर्मा, आर.ए. (2009)– ''शिक्षा अनुसंधान'',मेरठ, आर.लाल बुक डिपो, पृष्ठ संख्या 72
3. मालवीय, पंडितरामेश्वरप्रसाद (1990), ''गीताअवगाहन''प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 45
4. अरूणप्रभा, (2008) गंगा प्रकाशन, अलवर, पृष्ठ संख्या 172
5. भगवद्दर्शन (मासिक पत्रिका), (2004) श्रीउज्ज्वलजाजू, मुम्बई, पृष्ठ संख्या 5
6. पाण्डेय,विद्यानन्द (2004), ''प्राईमरी शिक्षक (पत्रिका), एन.सी.ई.आर.टी. नईदिल्ली, पृष्ठ संख्या 32

शोध प्रारूप की स्वीकृति हेतु अनुमोदन

शोध निर्देशिका के हस्ताक्षर | शोधकर्त्री के हस्ताक्षर